''सामाजिक–आर्थिक स्तर का किशोर विद्यार्थियों के मूल्य संघर्ष पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

डॉ. प्रेमलता गाँधी

प्रस्तावना :–

''किसी देश की संरचना में वहाँ की जनता के जीवन मूल्य, नैतिकता और आचरण प्रकट होती है, वह ये निर्धारित करते है कि देशा प्रगति के पथ पर चलेगा या ठहराव के दौर से गुजरेगा, अतएव प्रत्येक नागरिक में शाश्वत जीवन मूल्यों का भाव भरने की आवश्यकता है''

(ए.पी.जे. अब्दुल कलाम)

हमारा मानव जीवन पूर्णतया उस परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति तथा धरोहर है, जिसने हमें इस शरीर रूपी कवच में जीवन रूप दिया है, पर उसे सजना सँवरना व श्रेष्ठता देकर उँचा उठाना मानव के स्वंय के हाथ में है यह प्रक्रिया समाज में आज मूल्य शिक्षा के रूप में शिक्षाविदों को झकझोर हुए है। हमारी समझ में जो दृश्य जगत है, जो सांसारिक प्रपंच है उसमें ज्ञान का वास्तविक स्वरूप क्या है? मानवीय व्यवहार में अच्छा क्या है तथा स्वीकार्य तथा त्याज्य क्या है? यही उस समाज के मूल्य बन जाते हैं।

मूल्य किसी समाज के प्रचलित वे आदर्श लक्ष्य होते है जिनके प्रति सदस्य श्रृद्धा रखते है और उन्हें सामाजिक जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता है। इस महत्वपूर्ण मापदण्ड़ों के आधार पर समाज में विशिष्ट वस्तुओं, घटनओं और व्यक्तिगत व्यवहारों का मूल्याकंन किया जाता। मानव समाज में सदा से मूल्यों, आदर्शों तथा चिन्तन की व्यवस्था रही हैं। मानव की यह विशेषता है की वह व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए लक्ष्य, आदर्श और व्यवहार के प्रतिमान निर्धारित करता है और उन्हीं के आधार पर अपना जीवनयापन करता हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होते हुए यह आदर्श मूल्य बन जाते है। समय की आधुनिकता में भौतिकता की आड़ में जीवन के इन मूल्यों को काफी पीछे छोड़ दिया है। आज आवश्यकता इसबात की है कि छात्रों में ऐसे मानवीय गुणों, संस्कारों एवं मूल्यपरक आदर्शों को विकसित किया जाए जो उसके वैयक्तिक उत्थान के साथ–साथ राष्ट्र एवं सम्पूर्ण मानव जाति के लिए उपयोगी हो, चूँकि शिक्षा का लक्ष्य बच्चों का सर्वागीड विकास है। अतः मूल्यपरक शिक्षा ही इसका सर्वोत्तम साधन है। आज समाज में व्याप्त मूल्यविहीन शिक्षा ने शिक्षाविदों का ध्यान मूल्य शिक्षा की ओर आकृष्ट किया हैं।

डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर ने कहा है :– ''हमारे युवा भारतीयों को उस विरासत को पहचानने दो जो उनकी अपनी है। ईश्वर करे कि युवा पीढ़ी भारत की वास्तविक आत्मा को पहचानने अपने सभी कार्यों में उसका अनुसरण करें।''

शोध उद्देश्य :– अध्ययन की दृष्टि से निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं –

1. ग्रामीण विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक स्तर के मूल्य संघर्ष का पता लगाना।

2. शहरी विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक स्तर के मूल्य संघर्ष का पता लगाना।
3. ग्रामीण विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष का पता लगाना।
4. शहरी विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष का पता लगाना।
5. ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का परिसीमन :— प्रस्तुत शोधकार्य हेतु उदयपुर जिलें के ग्रामीण व शहरी राजकीय विद्यालयों के 120 छात्रों तक सीमित रखा गया।

न्यादर्श :—

शोधकर्ता ने उदयपुर जिले के राजकीय विद्यालयों का चयन किया गया है। उदयपुर जिले में संचालित राजकीय विद्यालयों के छात्रों का चयन यादृच्छिक विधि से 120 विद्यार्थीयों का चयन किया गया है जिसमें 60 ग्रामीण व 60 शहरी।

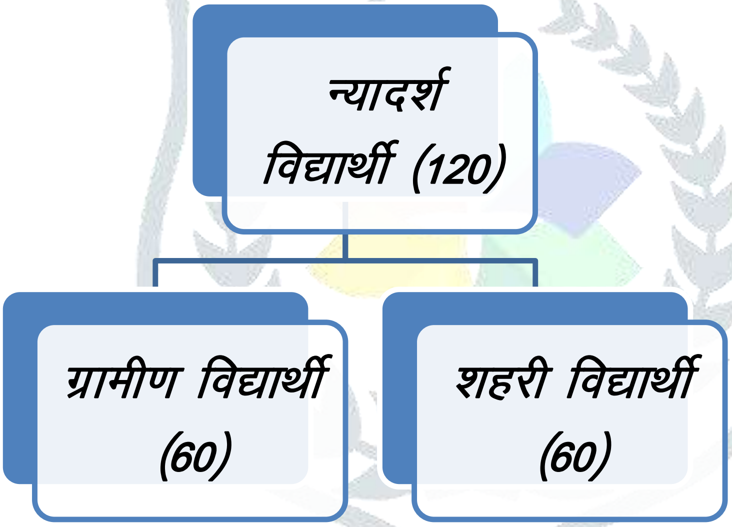

उपकरण :—

प्रस्तुत लघुशोध में सामाजिक–आर्थिक स्तर का किशोर विद्यार्थियों के मूल्य संघर्ष पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाने के लिए एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया जाएगा।

शोध विधि :—

प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। सर्वेक्षण विधि तथ्यों को अधिक तर्कसंगत रूप में रखती है तथा यह विधि किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर समूह से सम्बन्धित होती है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधि :—

किसी भी शोधकार्य के लिए प्रदतों के संकलन तथा इनके व्यवस्थिति विश्लेषण के लिए जिस प्रक्रिया का सहारा लिया जाता हैं। उसे सांख्यिकी प्रविधि कहते है। प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित प्रविधियों का उपयोग किया गया हैं।

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी मान

आँकड़ों का विश्लेषण :

उद्देश्य :– ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 1.1

ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	अध्ययन के आयाम	ग्रामीण		शहरी		टी–मान	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
1.	सामाजिक मूल्य संघर्ष संबंधी अभिमत	30.15	3.52	32.15	3.66	2.88	सार्थक अन्तर पाया गया

सारणी संख्या 4.5.5 का अध्ययन करने पर पता चलता है कि ग्रामीण विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक–आर्थिक मूल्य संघर्ष सम्बन्धी के सभी कथनों पर व्यक्त राय के आधार पर का मध्यमान व प्रमाप विचलन क्रमशः 30.15, 32.15 व 3.52, 3.66 प्राप्त हुआ। दोनो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। टी–परीक्षण से इस क्षेत्र के लिए टी–मान 2.88 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रता के अंश 118 के 0. 05 स्तर के1.99 व 0.01 के स्तर पर 2.64 सारणीमान 2.88 से अधिक है अर्थात दोनो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर सार्थक है।

निष्कर्षत विश्लेषण से यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण विद्यालयों में छात्रों के सामाजिक–आर्थिक मूल्यों में संघर्ष अधिक पाया जाता है।

उद्देश्य :– शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 1.2

शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष मध्यमान, मानक विचलन व टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	अध्ययन के आयाम	ग्रामीण		शहरी		टी–मान	सार्थकता स्तर
		मध्यमान	मानक	मध्यमान	मानक		

			विचलन		विचलन		
1.	सामाजिक मूल्य संघर्ष संबंधी अभिमत	27.05	3.25	28.02	3.62	2.80	सार्थक अन्तर पाया गया

सारणी संख्या 1.2 का अध्ययन करने पर पता चलता है कि शहरी विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक–आर्थिक मूल्य संघर्ष सम्बन्धी के सभी कथनों पर व्यक्त राय के आधार पर का मध्यमान व प्रमाप विचलन क्रमशः 27.05, 28.02 व 3.25, 3.62 प्राप्त हुआ। दोनो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। टी–परीक्षण से इस क्षेत्र के लिए टी–मान 2.80 प्राप्त हुआ जो कि स्वतन्त्रता के अंश 118 के 0.05 स्तर के1.99 व 0.01 के स्तर पर 2.64 सारणीमान से 2.88 अधिक है अर्थात दोनो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर सार्थक है।

निष्कर्षत विश्लेषण से यह कहा जा सकता है कि शहरी विद्यालयों में छात्रों के सामाजिक–आर्थिक मूल्यों में संघर्ष पाया जाता है।

शोध निष्कर्ष :–

ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों के सामजिक –आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन।

1. शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया है ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक–आर्थिक मूल्यों के बीच संघर्ष स्थिति पैदा होती रहती है। क्योंकि विद्यालयों में अध्ययनरत अधिकतर विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश के होते जिनकों सामाजिक मूल्यों व आर्थिक मूल्यों को मानने के लिए बाध्य किया जाता है जिससे उनमें उन्माद व संघर्ष की भावना जाग्रत होती है।
2. शोधकर्ता ने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला है कि ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों में आर्थिक मूल्यों की अपेक्षा सामाजिक मूल्यों के बीच ज्यादा संघर्ष पाया जाता है।
3. शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया है कि ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को विद्यालय में अपने सहपाठियों व कभी–कभी अध्यापकों के आचरण या व्यवहार के कारण भी आर्थिक मूल्य संघर्ष की अपेक्षा सामाजिक मूल्य संघर्ष अधिक करना पड़ता है।

शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक –आर्थिक स्तर के मूल्य संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन।

1. शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया है शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक–आर्थिक मूल्यों के बीच संघर्ष स्थिति पैदा होती रहती है। क्योंकि विद्यालयों में अध्ययनरत अधिकतर विद्यार्थी शहरी परिवेश के होते जिनकों सामाजिक मूल्यों व आर्थिक मूल्यों को मानने के लिए बाध्य किया जाता है जिससे उनमें उन्माद व संघर्ष की भावना जाग्रत होती है।
2. शोधकर्ता ने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला है कि शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों की अपेक्षा आर्थिक मूल्यों के बीच ज्यादा संघर्ष पाया जाता है।

3. शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया है कि शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों को विद्यालय में अपने सहपाठियों व कभी–कभी अध्यापकों के आचरण या व्यवहार के कारण भी आर्थिक मूल्य संघर्ष की अपेक्षा सामाजिक मूल्य संघर्ष अधिक करना पड़ता है।